© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

भारतीय मुद्रा लिपियों की समीक्षा (200 ई. पू. से 600 ई.)

डॉ उमेश तिवारी
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मानवीय समझ के प्रारम्भिक दौर में अपनी अभिव्यक्ति को सम्प्रेषित करने के लिए उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को चित्रित कर दिया जाता था। इसे ही चित्रात्मक लिपि अर्थात् Pictographic Script कहा गया, यह लिपि का शैशव काल था। मानवीय विकास जैसे–जैसे आगे बढ़ा उसी औसत में लिपि का भी विकास होता गया। अब लिपि में चित्रात्मकता के साथ–साथ भावनात्मक प्रवृत्ति भी आने लगी जिससे Ideographic Script का जन्म हुआ। इसके उपरान्त विकास क्रम आगे बढ़ा तो ध्वन्यात्मक लिपि अर्थात् Phonetic or Phonographic Script का चलन प्रारम्भ हुआ। इस लिपि में चित्र केवल ध्वनि को प्रकट करते है और उन ध्वनियों के आधार पर किसी वस्तु या भाव का नाम लिया जा सकता है। अक्षरात्मक वर्णात्मक तथा रेखाक्षरात्मक लिपि, ध्वन्यात्मक लिपि के ही अंग हैं।

भारतीय इतिहास के अनुसार सिन्धु–सभ्यता कालीन लिपि का अन्त लगभग 1700 ई.पू. तक हो गया, इसके बाद ज्ञान का सम्प्रेषण पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से होता रहा। लेकिन इस मौखिकता को लगभग छठी शताब्दी ई.पू. में विराम मिला, क्योंकि तत्कालीन साहित्यिक साक्ष्य लिपि से सन्दर्भित सूचना देने लगे जैसे– बौद्ध, जैन ग्रन्थों में लिपियों के नाम का उल्लेख, तैत्तिरीय उपनिषद् में वर्ण एंव मात्राओं का उल्लेख, यास्क की निरूक्त तथा पाणिनि की अष्टाध्यायी आदि में भी। उल्लेखनीय है कि यह उदाहरण साहित्यिक साक्ष्य के हैं। लिपि के प्रमाणिक साक्ष्य तो अशोक के अभिलेखों के रूप में मिलते हैं, जिसमें ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाइक आदि लिपियों का प्रयोग किया गया। इस प्रकार भारत में लेखन कला का प्रमाणिक काल 400 ई.पू. के लगभग माना जा सकता है।

आहत सिक्के, लिपि के अन्धकार काल में जन्में, फलतः इन सिक्कों पर कोई लेख न होकर सूर्य, षडरचक्र, अर्द्धचन्द्रयुक्त पर्वत, वृषभ, उज्जैनी चिन्ह, स्वस्तिक, पशु–पक्षी, ज्यामितीय आकृति, ट्री इन रेलिंग आदि प्रतीक चिन्हों का अंकन किया गया है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत कई छोटे–छोटे हिस्सों में बँट गया कौशाम्बी, तक्षशिला, पांचाल, कोशल, उज्जैन, विदिशा, महिष्मती जनपदीय सत्तायें स्थापित हुई।[1] यही नहीं यौधेय, आर्जुनायन,

कुणिन्द, मालव आदि गणराज्य भी स्वतन्त्र सत्ता के साथ अवतरित हुए।[2] राजनीतिक दृष्टि से कमजोर भारत पर विदेशी आक्रान्ता भी हावी होने लगे। यवन, शक, पह्लव, कुषाण आदि विदेशियों ने क्रमशः अपनी–अपनी सत्तायें स्थापित की। मौर्योत्तर कालीन उक्त विदेशी शासकों ने यूनानी, खरोष्ठी तथा ब्राह्मी लिपियों से लेखांकित सिक्के जारी किये।

दूसरी शताब्दी ई.पू. ड्रेमेट्रियस ने पश्चिमोत्तर भारत पर अधिकार करके शाकल (स्यालकोट) को राजधानी बनाया। हिन्द–यवन शासकों ने सोने, चाँदी तथा ताँबें के सिक्के जारी किये। इनकी मुद्राओं के अग्रभाग पर शासक की आवक्ष आकृति का चित्रांकन यूनानी लिपि में शासकों के नाम व उपाधियाँ तथा पृष्ठभाग पर किसी देवी–देवता की आकृति का अंकन या किसी पवित्र धार्मिक चिन्ह के साथ यूनानी व खरोष्ठी लिपि में लेख हैं।[3] डेमेट्रियस ने यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि में लेखांकित सिक्के जारी किये। पेण्टालियान तथा अगाथाक्लीज नामक हिन्द–यवन शासकों ने सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में बेसिलियास,एनिकेटाउ, स्ट्रेटोनास, निकेटोरास, सोटेरास, तथा खरोष्ठी लिपि में त्रतस, महरजस, त्रतरस, ध्रमिकस आदि का लेखांकन मिलता है।

प्रसिद्ध हिन्द–यवन शासक मिनेण्डर द्वारा जारी सिक्कों के अग्रभाग पर राजा को भाला लिये हुए दिखा गया है। यूनानी लिपि में *'बेसिलियास सोटेरस मिनेण्डराउ'* लेख अंकित है। इसके पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि *'महरजस त्रतरस मिनण्डरस'* लेखांकित है।[4] हरमेयस अन्तिम महत्वपूर्ण हिन्द–यवन सम्राटों में था। इसकी मुद्राओं के आधार पर ही मेसन, जेम्स प्रिंसेप व कनिंघम आदि ने यूनानी व खरोष्ठी लिपि में अन्तर स्पष्ट करते हुए खरोष्ठी लिपि की पहचान की।

नहपान की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर वज्र, वाण के साथ ब्राह्मी में *'राज्ञों क्षहरातस नहपानस'* तथा खरोष्ठी में *'राज्ञों चहरतस नहपानस'* लेखांकित है।[5] क्षत्रप रूद्रसिंह प्रथम की चाँदी की मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा की आवक्ष आकृति व वर्ष 115 (शक्) तथा पृष्ठभाग पर चैत्य के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी लेख *'राज्ञो महाक्षत्रपस रूद्रदामा पुत्रस राज्ञः क्षत्रपस रूद्रसिंह'* है।

शक्ों की तर्ज पर पह्लव सिक्के भी निर्मित हुए लेकिन उनमें भी भारतीय तत्त्वों की झलक मिलने लगी। पह्लव शासक गोण्डोफर्नीज के सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में *'बेसिलियास बेसिलियान मेगालाउ वोण्डेफेराउ'* तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में *'महरज रजतिरजस त्रदत देवव्रतस गुन्दफरस'* लेखांकित है।

सातवाहन मुद्राओं पर ब्राह्मी लिपि के साथ प्रान्तीय द्रविड़ भाषा का प्रयोग हुआ है इनकी मुद्राओं पर उज्जैनी चिन्हों की अधिकता है।[6] शातकर्णि की मुद्रा के अग्रभाग पर उछलते हुऐ मोर के पास स्वस्तिक व *'राज्ञो सिरि सातकनिस'* अंकित है जबकि पृष्ठभाग पर बिन्दु, नन्दिपद के साथ उज्जैनी चिन्ह बना है। गौतमीपुत्र सातकर्णि के सिक्के के अग्रभाग पर चैत्य के अंकन के साथ *'राज्ञो गौतमी'* लेख अंकित है जब कि पृष्ठभाग पर उज्जैनी चिन्ह का अंकन है।

कुजुल कडफिसेस, विम कडफिसेस, कनिष्क, हुविष्क व वासुदेव आदि कुषाण सम्राट अपनी मुद्राओं पर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि में लेख भी अंकित करवाये। कुजुल कडफिसेस द्वारा जारी सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में *'बेसिलियास सोटेरासो आरमाइयो'* पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में *'कुजुल कसस कुषण यवुगस धमठिदस'* का लेखांकन है। विम कडफिसेस के सिक्के के अग्रभाग पर शासक के दैवीय स्वरूप को प्रदर्शित करते हुए उसे बादलों से निकलता हुआ तथा उसके कन्धों से अग्नि की ज्वाला निकलती हुई दिखायी गयी है। वह बूट व टोप धारण किये हुए हैं और दायें हाथ व कन्धों पर गदा है, बाँया हाथ जंघों पर रखा हुआ प्रदर्शित किया गया है। इसी के साथ यूनानी लिपि में *'बेसिलिओस ओइमो कैडफाइसेस'* लेख है। इसी सिक्के के पृष्ठ भाग पर प्रभामण्डल युक्त शिव गले में हार धारण किये, दाहिने हाथ में लम्बा त्रिशूल लिए उनके पीछे नन्दी का चित्रांकन है। कनिष्क की स्वर्ण मुद्रा के अग्रभाग पर राज को लम्बी कोट, शलवार, कमरबन्द, गोल टोपी लगाये अग्निकुण्ड में आहुति देते प्रदर्शित किया गया है। पृष्ठभाग पर चतुर्भुजी शिव के साथ यूनानी लिपि में *'ओयशो'* अंकित है।[7] हुविष्क के सभी सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में *'षाओ नानो षाओं हुविष्की कोषानो'* लेख अंकित है।[8] जबकि पृष्ठभाग पर यूनानी लेख अथशो, अरदोक्षो, माओं, नाना, फारो व भारतीय देवी–देवताओं के रूप उसके सिक्कों में बदलता रहा।[9] वासुदेव नाम विशुद्ध भारतीय है यद्यपि वह कुषाण शासक था इसकी मुद्राओं के अग्रभाग पर *'षाओ नानो षाओं बाजोदेवो कोषानो'* लेख अंकित है। इसकी कुछ मुद्राओं पर 'वसु' जैसे ब्राह्मी लिपि के शब्द भी आये हैं। जबकि पृष्ठभाग पर शिव के चित्रांकन के साथ यूनानी लिपि में *'ओयशो'* लेख अंकित है।

कौशाम्बी का प्रारम्भिक शासक शुंग वर्मा था। दूसरी शताब्दी ई.पू. के इस शासक की ताम्र मुद्रा हुई है, जिस पर एक यूप के साथ घोड़े का चित्रांकन है और ब्राह्मी लिपि में *'शुगवामस'* लेख अंकित है। इसके अतिरिक्त भीमसेन मघ आदि राजाओं के ताँबे के अनेक सिक्के मिले हैं, जिन पर वृषभ, ध्वज, घेरे में वृक्ष, हाथी, मछली, स्वस्तिक, उज्जैनी चिन्ह आदि के चित्रांकन के साथ *'राजा'*, *'महाराजा'* लेख अंकित है। कोशल महाजनपद के पौराणिक स्थल अयोध्या से अनेक ताम्र मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। यहाँ से प्राप्त देव मित्र के सिक्के के अग्रभाग पर ध्वज के सम्मुख वृषभ के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी लिपि में *'देवमित्र'* अंकित है। सत्यमित्र की ताम्र मुद्रा के अग्रभाग पर वृषभ के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी में *'सतमित्रस'* लेख अंकित है। इसी प्रकार यहाँ से प्राप्त मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा का नाम ब्राह्मी लिपि में अंकित है जबकि पृष्ठभाग पर मयूर, त्रिशूल, नन्दी आदि का चित्रांकन मिलता है।

तक्षशिला, कौशाम्बी से नैगम मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं, जिन्हें निगम या श्रेणी संस्थाओं ने जारी किया था। इन मुद्राओं क अग्रभाग पर 'तालीमत' दोजक, अटका आदि लेखांकित है जबकि पृष्ठभाग पर 'नेगम' अंकित है। इन सिक्कों पर मोर, मकर, हाथी, नन्दी आदि भारतीय धर्म से सम्बन्धित प्रतीक चिन्हों का अंकन मिलता है।

गणराज्यों ने चाँदी व ताँबे की मुद्रायें जारी की। इन गणराज्यों द्वारा जारी सिक्कों की यह सामान्य विशेषता थी कि गण का नाम, राजा का नाम, गण के आराध्य देव का नाम तथा किसी आर्श वाक्य का अंकन मिलता है। यौधेयों के सिक्कों के अग्रभाग पर युद्ध देवता शिवपुत्र कार्तिकेय के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी में *'यौधेय गणस्य जयः', 'बहुधान्यक यौधेयानाम्'* लेख अंकित है तथा पृष्ठभाग पर लक्ष्मी का अंकन है। कुणिन्द गणराज्य द्वारा जारी सिक्कों पर ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि में लेख मिलते हैं। अमोघभूति नामक शासक की चाँदी तथा ताँबे की मुद्रायें प्राप्त हुई हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम ने राजा–रानी प्रकार के स्वर्ण सिक्के जारी किये।[10] इसके अग्रभाग के दाहिनी ओर *'श्री कुमार देवी'* तथा बांयी ओर *'चन्द्रगुप्त'* लिखा है जिस पर चित्रांकन राजा खड़ा होकर रानी को अंगूठी जैसी कोई चीज दे रहा है। इसी सिक्के के पृष्ठभाग पर नालयुक्त कमल लिये सिंहवाहिनी देवी के चित्रांकन के साथ *'लिच्छवयः'* लेख अंकित है।[11]

समुद्रगुप्त ने छः प्रकार की स्वर्ण मुद्रायें जारी की– गरूड़ध्वज शैली, धनुर्धारी शैली, परशु शैली, वीणावादन शैली, व्याध्र शैली, अश्वमेध शैली। गरूड़ शैली के सिक्के सबसे पहले समुद्रगुप्त ने ही जारी किये।[12] इस मुद्रा के अग्रभाग पर बायें हाथ में गरूड़ ध्वज व दाहिने हाथ से अग्नि को आहूति देते हुए राजा चित्रांकित है और पृष्ठभाग पर प्रभामण्डलयुक्त सिंहासनारूढ़ देवी का अंकन है। वीणावादन शैली मुद्रा के अग्रभाग पर वीणा बजाते हुए राजा के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी में *'महाराजाधिराज श्री समुद्रगुप्तः'* लेखांकन है। पृष्ठभाग पर हाथ में कार्नकोपिया लिये देवी के चित्रांकन के साथ *'समुद्रगुप्त'* का लेखांकन है।

समुद्रगुप्त का मुद्रा आदर्श अपनाते हुए चन्द्रगुप्त द्वितीय ने प्रचुर मात्रा में धनुर्धारी, सिंहनिहन्ता, अश्वारोही, छत्र, पर्यंक आदि शैलियों की स्वर्ण मुद्रायें जारी की। चन्द्रगुगुप्त द्वितीय के अवश्वारोही प्रकार के सिक्के मौलिक थे क्योंकि इसका प्रारम्भ सम्राट ने किया था। इस मुद्रा के अग्रभाग पर प्रभामण्डलयुक्त सम्राट आभूषण व तलवार धारण किये, सुसज्जित घोड़े पर सवार प्रदर्शित किया गया है। इसी भाग पर ब्राह्मी में *'देवश्रीमहाराजाधिराजश्रीचन्द्रगुप्त'* लेख अंकित है। पृष्ठभाग पर बांये हाथ में कमल तथा दाहिने हाथ में पाश लिये देवी का चित्रांकन है।[13] इसके बाद कुमारगुप्त के काल में मुद्रा कला शिखर पर पहुँच कर अवनति की ओर अग्रसर होने लगी।[14] कुमारगुप्त ने कार्तिकेय शैली, गजारोही शैली, धनुर्धारी शैली, सिंहनिहन्ता शैली, अश्वारोही शैली, अप्रतिघ शैली आदि नवीन मुद्रा शैलियों का प्रयोग किया। इन मुद्राओं पर विभिन्न लेख मिलते हैं जैसे– *'महाराजाधिराज', 'श्रीकुमारगुप्त', 'महेन्द्रादित्यः'*। इसके उपरान्त स्कन्दगुप्त समस्याओं से घिरा हुआ था, मुद्रा निर्माण के अनुकूल परिस्थितियाँ न रह सकी। यद्यपि स्कन्दगुप्त के काल की सर्वप्रिय धनुर्धारी प्रकार की मुद्रायें थीं। इसमें राजा लम्बे कोट व पायजामें के साथ चित्रांकित है, इन मुद्राओं के अग्रभाग पर बाण के साथ राज का चित्रांकन तथा *'जयति महीतलम सुधन्वी'* या *'परहितकारी राजा जयतिदिवं श्री क्रमादित्यः'* लेखांकित है। पृष्ठभाग पर *'श्रीस्कन्दगुप्त'* या *'क्रमादित्य'* लेख मिलता है। इस सम्राट ने राजा–लक्ष्मी प्रकार, छत्र प्रकार आदि मुद्रायें जारी की। इसके अतिरिक्त देवी प्रकार के चाँदी के सिक्कों के अग्रभाग पर राजा के अर्धचित्र के

साथ *'विक्रमादित्य'* या *'क्रमादित्य'* लिखा गया है जबकि पृष्ठभाग पर देवी के अंकन के साथ *'परम भागवत श्री विक्रमादित्य स्कन्दगुप्तः'* लिखा गया है। इसके बाद पुरूगुप्त, नरसिंहगुप्त, बुद्धगुप्त, वैन्यगुप्त, प्रकाशादित्य, कुमारगुप्त तृतीय, विष्णुगुप्त (543–550 ई.) गुप्त शासक हुए, मुद्रा विकास के क्रम में इनका उल्लेख आवश्यक नहीं प्रतीत होता।

महान गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत पुनः छोटे–छोटे राज्य में परिवर्तित हो गया, इस क्रम में कन्नौज के मौखरि तथा वर्धन राजवंश का नाम लिया जा सकता है। ईशानवर्मन, सर्ववर्मन तथा मौखरि शासक अवन्तिवर्मन आदि के जो सिक्के मिलते हैं वे गुप्तों के चाँदी के सिक्कों के अनुकरण मात्र हैं।[15] इनकी मुद्राओं पर शासक का आवक्ष, उसकी उपाधि, पंखयुक्त मोर के साथ तिथि का अंकन मिलने लगता है।

lUnHkZ xzUFk%&

1- पी.एल. गुप्ता–*भारत के पूर्वकालिक सिक्के,* पृष्ठ–38.

2- भाष्कर चट्टोपाध्याय–*क्वाइन्स एण्ड आइकान्स,* पृष्ठ–40

3- एच.एल. हट्टन–जे.एन.एस.आइ., जिल्द–4, पृष्ठ–146.

4- आर.बी. ह्वाइटहेउ–*कैटलॉग ऑफ इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स,* वाल्यूम–1, पृष्ठ–54.

5- पी.एल. गुप्ता–जे.एन.एस.आई, जिल्द–28, पृष्ठ–220–227.

6- अनूप कुमार–*प्राचीन भारतीय मुद्राशास्त्री इतिहास में देशी एवं विदेशी तत्व,* पृष्ठ 59.

7- ए.के. भट्टाचार्या–*इण्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत,* पृष्ठ–31.

8- आर.बी. ह्वाइटहेड–*कैटलॉग ऑफ द क्वाइन इन द पंजाब म्यूजियम,* वाल्यूम–1, पृष्ठ–75.

9- कनिंघम–आई.एम.सी., वाल्यूम–1, पृष्ठ–187.

10- ए.एस. अल्टेकर–न्यू सप्लीमेन्ट, पृष्ठ–105.

11- ए.एस. अल्टेकर–*गुप्त कालीन मुद्रायें,* पृष्ठ–1.

12- ए.एस. अल्टेकर–*क्वाइन्स ऑफ द गुप्ता एम्पायर,* पृष्ठ–26–28.

13- एलन–*कैटलॉग ऑफ द इण्डियन क्वाइन्स,* पृष्ठ–43.

14- अजीत राजयादा–*भारतीय सिक्कों का इतिहास,* पृष्ठ–109.

15- अजीत रायजादा–उपरोक्त, पृष्ठ–123.